ओ३म्

# साईं प्रचारकों से ८० प्रश्न

A01H


लेखक

**ए.के प्रधान**

(अमूल्य कुमार प्रधान)

Mob- 7064186464

Email- PradhanAK@Outlook.com

## भूमिका

आज अज्ञानता के कारण लोग जिसने जो कुछ कहा बिना कुछ विचार किये उसको धर्म समझ के पालन कर रहे है ।ऐसे ही शिरडी में एक मुस्लिम भीखारी ने लोगों को मुर्ख बनाया और पुरे जिन्दगी हिन्दुओ का इस्लामीकरण किया । ऐसे ही नहीं वहाँ के हिन्दुओ में भी कुछ गद्दार थे जिन्होंने पैसों केलिए धर्म का सौदा किया ।
जिस साई को आज से १५-२० साल पहले कोई पूजता नहीं था वो अचानक हिन्दुओ का सबसे बड़ा भगवान बन गया । हिन्दुओ के तथाकथित ठेकेदार भी सुरुवाती दिनों में तर्क के साथ विरोध करने के वजाय आज मुँह खोल रहे है ,उनके विरुद्ध अनाप सनाप बिना कोई प्रमाण दिए सिर्फ विरोध करते जा रहे हैं । लेकिन इससे अपने ही दूर हो जायेगे,क्यों की वो अज्ञानी है,उनको ज्ञान से समझाया जा सकता है , बिना कोई तर्क प्रमाण दिए बोलने से कोई फायदा नहीं,ऐसे में कोई नहीं सुनेगा भी नहीं ।

साई के पुझारीयों के वारे में बस यही कहूँगा की वे सचाई जानते हुए भी लोभ लालच के कारण धर्म के विरुद्ध कार्य करने हेतू शास्त्रों के अनुसार वे ब्राह्मण नहीं रहे । अब अनार्य के श्रेणी में आगये, म्लेच्छ बन गये हैं वो। हिन्दुओ से अनुरोध है उनको किसी भी कर्मकाण्ड यज्ञादि कर्मो में न बुलायें- ये मनुस्मृति का बचन है ।

और पाठकों से निवेदन है की वे खुद शास्त्रों को पढ़ के धर्म को समझें और धर्मशास्त्रों के अनुकूल सही गलत विचार कर आचरण करें । मैंने इस पुस्तक में साई प्रचारकों केलिए कुछ सवाल रखा है ,सभी प्रमाण "साई सत्चरित्र " से लिया गया , आशा करता हूँ वे जरुर जवाब देंगे। अगर देने में असमर्थ रहे तो उनसे निवेदन है की हिन्दुओ को मुर्ख बनाना बन्द करें ।

ए.के प्रधान

प्रश्न १ – अध्याय १ में लेखक ने साई को ब्रह्मा विष्णु महेश भगवती बताया है , लेकिन इसका क्या प्रमाण है ,किसी वेद पुराणों में उल्लेख है या जो मन में आया लिख दी ?फिर उन्होंने दत्तात्रेय और कृष्णा राम का अवतार भी बताया है | कहीं हनुमान गणेश भी बताते हो ।अगर हनुमान के अवतार हैं तो राम के नहीं हो सकते ,अगर गणेश हैं तो शिव नहीं हो सकते क्यों की हनुमान और राम अलग हैं गणेश और शिव जी अलग हैं । असल में किसका अवतार है साई? और क्या प्रमाण है ?

प्रश्न २– अध्याय २ में लिखा है की बाबा आटा पीस कर हैजा दूर की | लेकिन आटा पिसने का कार्य तो वो रोज ही किया करते थे पुरे ६० साल तक की फिर भी हैजा क्यों हुआ ? क्या लेखक ने झूठ कहा है की अट्टा पीस कर हैजा दूर की ?

प्रश्न ३– अध्याय २ में लेखक ने कहा है की–"अवतारों की प्रवृति के वर्णन में वेद भी अपनी असमर्थता प्रगट करते हैं" क्या लेखक को इतना भी नहीं पता की वेदों में अवतारवाद ही नहीं है | लेखक ने यहाँ वेदों की निंदा क्यों की ?

प्रश्न ४– लगता है बाबा कुछ ज्यादा ही नशा करते थे क्यों की, महाराष्ट्र के शिरडी के एक टूटे फूटे मस्जिद में बैठ के कहा करते थे "मैं ही समस्त प्राणियों का प्रभु और घट–घट में व्याप्त हूँ। मेरे ही उदर में समस्त जड़ व चेतन प्राणी समाये हुए है । मैं ही समस्त ब्राहांड़ का नियंत्रणकर्ता व संचालक हूँ। मैं ही उत्पत्ति व संहारकर्ता हूँ"(अध्याय ३)

*जैसे मद्यपान करने वाला कुछ समय केलिए खुद को राजा समझ लिया हो*

प्रश्न ५– रोहिला नाम के एक व्यक्ति दिन रात कर्कस आवाज से कुरान सरिफ पढ़ "अल्लाह हो अकबर " नारे लगता था ,पुरे गाँववाले इससे परेसान थे क्यों की वो खेतो में मेहनत करते थे रात को इसी कारण ठीक से विश्राम नहीं कर पाते थे । जब असहनीय होगया तब बाबा से रोकने की प्राथना की लेकिन बाबा ने पुरे गाँववालो का समर्थन न कर सिर्फ एक मुस्लिम का समर्थन किया (अध्याय ३) | एक आदमी केलिए पुरे गाँववालों को कष्ट पहुंचा कर उनपर अन्याय क्यों किया ?

प्रश्न ६- सर्दी व गर्मी की उन्हें किंचितमात्र भी चिंता न थी ऐसा अध्याय ३ में लिखा है. तो फिर ठण्ड से बचने केलिए आग क्यों लगाते थे(अध्याय ५)???? और तो और तुम उसे अग्निहोती बता कर लोगों को क्यों ठगते हो क्यों झूठा प्रचार करते हो की बाबा होम यज्ञ करते थे ?

प्रश्न ७- साई ने दासगणु को प्रयाग स्नान से रोका ये कह कर की व्यर्थ है ,फिर तुम लोग अब ऐसा कहते हो की साई ही सबकुछ हैं | फिर तुम्हारे पौराणिक शास्त्र क्यों कहते है की गंगा स्नान करने से पाप नष्ट होगा ? तुम भी पहले बताते फिरते थे साई को पूजने से पहले | पहले तुम लोगों को मुर्ख बनाते थे या अब बना रहे हो ??

प्रश्न ८- लेखक के अनुसार साई बाबा उनके लिए राम कृष्ण सदृश थे तो बताये की साई का कौन सा गुण राम कृष्ण सदृश था,क्या उन्होंने कभी बिधर्मियो का विनाश कर के धर्म की स्थापना की ? अधर्म के विरुद्ध युद्ध की ? क्या बाबा राम कृष्णा जैसे वेदसम्मत आचरण करते थे ?संध्योपासना करते थे ?क्या राम कृष्णा ने अभी अल्लाह मालिक कहा ?फिर क्यों कहते हो की वो राम कृष्णा के अवतार थे ?

प्रश्न ९- ईद के दिन बाबा मुसलमानों को मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिये आमंत्रित किया करते थे (अध्याय ६) लेकिन हिन्दू त्योहारों पर अकारण हिन्दुओं पर क्यों क्रोधित होते थे , क्या हिन्दू गैर मुस्लिम होने के कारण उनके त्योहारों से नफरत थी ?

प्रश्न १०- अगर साई बाबा हिन्दू थे तो सुन्नत कराने के पक्ष में क्यों थे ?(अध्याय ७)
क्यों माजिद में निवास करते थे ? क्यों अल्लाह मालिक कहा करते थे ?क्यों हिन्दुओ को हलाल मांस प्रसाद खिलाते थे ?क्यों मौलबी बुला कर फतिहा पढ़ाते थे ?क्यों कभी ओम् का उच्चारण नहीं की ?

प्रश्न ११- बाबा मुस्लिम फकीरों के साथ अमिष मछली भी खा लेते थे (अध्याय ७ ) लेकिन साई गुरुवार ब्रत कथा में ऐसा क्यों लिखे हो की उन्होंने कभी मांस सेवन नहीं की वो साकाहारी थे ? ऐसा झूठ लिख के तुम सचाई क्यों छुपाना चाहते हो ?

प्रश्न १२– अगर वो समस्त प्राणियों से प्रेम करते थे(अध्याय ८ ) तो बेकसूर निर्दोष प्राणियों की हत्या कर अपने भक्तो को मांस प्रसाद क्यों खिलाते थे ?

प्रश्न १३– अध्याय ८ में लिखा है "बाबा की जिह्वा को कोई स्वाद–रुचि न थी, क्योंकि उन्होंने उसे अपने वश में कर लिया था" और लिखा है "अमुक पदार्थ स्वादिष्ट है या नही, बाबा ने इस ओर कभी ध्यान ही न दिया, मानो उनकी जिह्वा में स्वाद बोध ही न हो" लेकिन अध्याय ९ में कोई श्रीमती पुरंदरे भुर्ता ले के मस्जिद आई थी और बाबा को वो भुर्ता स्वादिस्ट प्रतीत हुआ ,और भक्तो केलिए मांस पकाते वक्त मांस रुचिकर बने इसका वो हमेसा ध्यान रखते थे , ऐसा क्यों ?

प्रश्न १४– साई बाबा ने कहा है बिल्लियाँ, सुअर, मक्खियाँ, गाय आदि भी उनके ही स्वरुप हैं वे ही उनके आकारों में ड़ोल रहे हैं तो फिर व्यर्थ ही लोगों को शिरडी क्यों बुलाते हो , कुत्ते ,सुवर को उनके प्रिय खाद्य बिष्टा खिलाओ,उनको पूजो । ऐसा क्यों नहीं करते ?

प्रश्न १५– प्रत्यक्ष प्रमाण है बाह्यदृष्टि से श्री साईबाबा साढ़े तीन हाथ लम्बे एक सामान्य पुरुष थे(अध्याय १० )। तो लेखक ने ऐसा क्या देख लिया की उसे ईश्वर मान लिया,उनमे कौन से ईश्वरीय गुण थे?क्या लेखक को ईश्वर और मानव में फर्क नहीं पता?

प्रश्न १६– अध्याय १० में लिखा है की ३ साल रहने के बाद शिरडी छोड़ के कहीं औरंगाबाद निजाम स्टेट चले गये थे.फिर आप क्यों कहते हो की साई बाबा ने कभी शिरडी के बाहर पैर नहीं रखा ऐसे झूठ क्यों बोलते हो ?

प्रश्न १७– साई बाबा अल्लाह मालिक क्यों कहते थे , साई भक्त बताएं अगर अल्लाह मालिक है तो साई बाबा कौन थे ? अल्लाह के नौकर ? फिर अल्लाह साई से बड़ा हुआ ?

प्रश्न १८– बाबा ने कभी नहीं कहा कि मैं अनल हक्क (सोऽह्मम) हूँ। वे सदा यही कहते थे कि मैं तो यादे हक्क (दासोऽहम्) हूँ। अल्ला मालिक सदा उनके होठोंपर था (अध्याय २३) । अल्लाह ने हमेशा ये कहा की अल्लाह ही उनका मालिक है ,फिर तुम बाबा जो एक मुस्लिम थे उन्हें राम कृष्णा बताकर क्यों मन्दिरों में पूजते हो ?

प्रश्न १९– साई बाबा अगर खुद को इश्वर नहीं कहा तो उनको इश्वर सिद्ध करने में किसका हाथ है

और ईश्वर मान के क्यों पूज रहे जब उन्होंने कभी कहा ही नहीं ?

प्रश्न २०- अगर साई मूल रूप से निराकार थे और ये उनका असली शरीर नही था तो फिर क्यों उनके नकली मूर्ति को ईश्वर मान के पूजते हो ?

प्रश्न २१- साई बाबा के मूर्ति को खिलाते पिलाते हो चिलम भी पिलाते हो ऐसा सुनने को मिलता है । तो क्या वो जड़ मूर्ति शौच भी करता है ? क्या अन्दर शौचालय बनाये हो या जहाँ निकम्मे के तरह बैठे रहते है वहीं मल त्याग करते हैं ?

प्रश्न ३०- साई बाबा अल्लाह,जीसस का अवतार क्यों नहीं ?क्यों साई को मस्जिद,चर्च में पूजा नहीं करते ?सिर्फ मन्दिर में ही क्यों ? क्यों कोई भी मुस्लिम इसाई साई को नहीं पूजता ?

प्रश्न ३१- क्या तुम्हारे पूर्वज कभी साई को पूजा ? फिर तुम लोग पैसो केलिए धर्म विरुद्ध कार्य क्यों कर रहे हो ?

प्रश्न ३२- साई बाबा भारत के बाहर अवतार क्यों नहीं लिया , चीन जापान आदि देशों में क्यों नहीं लिया ?क्या वहाँ अवतार लेने से डरते थे ?

प्रश्न ३३- साई बाबा ने खुद को निम्न जाती का यवन माना है तो तुम लोग उन्हें जबरन हिन्दू बता कर क्यों लोगों को मुर्ख बना रहे हो ??(अध्याय २८)

प्रश्न ३४- साई सत्चरित्र के अनुसार इनका अवतार हिन्दू मुस्लिमो को एक करने कलिए हुआ था(अध्याय १०) ,फिर भी हिन्दू मुस्लिम एक क्यों नहीं हुए ? क्यों अलग से पाकिस्तान मुस्लिमो ने मांग की,क्यों मुस्लिमो ने हिन्दुओ की हत्या की ?तो फिर ये अवतार व्यर्थ हुआ या फिर तुम लोगों को मुर्ख बना रहे हो ?

प्रश्न ३५- साई के समय सबसे ज्यादा अंग्रेज अत्याचार करते थे , अंग्रेजो के विरुद्ध कभी आवाज क्यों नहीं उठाया ? जब भारत के क्रांतिकारी देश केलिए सहीद हो रहे थे तब साई बाबा कहाँ छुप के बैठे थे ? कोई चमत्कार क्यों नहीं किया ? अंग्रेजो को एक पत्थर तक मारा हो तो बताओ ?

प्रश्न ३६- जब राम और रहीम (मुसलमानों का खुदा) एक नहीं हैं तो साई ने क्यों झूठ कहा की राम और रहीम एक हैं ??

प्रश्न ३७- साई बाबा के शिरडी आने से पहले कौन से साई के भक्त थे जो उनके इच्छा पूर्ण करने केलिए अवतार लिया ??(अध्याय १०)

प्रश्न ३८- साई के पुझारी लोगों को कहते हैं की बाबा ने लोगों को स्वस्थ रहने केलिए आसन प्राणायाम करने को कहते थे लेकिन अध्याय १० में लिखा है की उन्होंने कभी अपने भक्तो को कभी आसन प्राणायाम उपासना करने को कभी नहीं कहा। ऐसा झूठ क्यों बोलते हो ?

प्रश्न ३९- लेखक ने साई बाबा को संस्कृत का ज्ञाता बताया है। लेकिन जब साई बाबा बचपन से भीख माँगा करते थे और कहीं पढने गये नहीं तो फिर उन्होंने संस्कृत कहाँ से सिखा , क्या लेखक ने ये बात अपनी मर्जी से जोड़ा है ?

प्रश्न ४०- साई बाबा अगर सदगुरु थे तो लोगों को गलत शिक्षा क्यों देते थे ? लोगों को नसा करने को प्रेरित करना ,बलि देने को कहना ,गाली देना क्या सब एक सदगुरु के लक्षण है ?

प्रश्न ४१- अगर पुराण के अनुसार अंतिम अवतार कल्कि है तो जितने साई शिरडी, सत्य आये हैं वो मिथ्या क्यों नहीं ? पौराणिक हो के पुराण के विरुद्ध क्यों जा रहे हो ?

प्रश्न ५०- लोगों के पूछने पर भी साई बाबा अपने माता पिता का नाम क्यों बताते नहीं थे? उन्हें बताने में सर्म आती थी या उन्हें पता भी नहीं था की वो किसके ओलाद हैं ?

प्रश्न ५२- ओम् सा* राम का अर्थ क्या है ?बिना अर्थ समझे जाने विचार किये क्यों पागलो के तरह जो मुँह में आया बोलते हो ? ओम् तो ईश्वर के नाम हैं , साई का अर्थ मुस्लिम फ़क़ीर भिखारी है। फिर तुम मुर्ख लोग आदर्शो का अपमान क्यों कर रहे हो ?

प्रश्न ४३- जितने महापुरुष हुए हैं सभी ने वेदों की मुक्त कंठ में प्रशंसा की है फिर साई व लेखक ने वेदों की निन्दा क्यों की ? क्या साई बाबा हिन्दुओ को वेद मार्ग से हटा कर उनका इस्लामीकरण करना चाहते थे ?

प्रश्न ४४- मस्जिद की सीडी चढ़ने से अगर दुःख नहीं होता तो बताये साई जीवन पर्यन्त मस्जिद में रहे फिर क्यों बीमार से तड़प तड़प के मर गये ?जो आदमी खुद बीमार से तड़प के मर गया वो लोगों को कैसे सुख दे सकता है ?

प्रश्न ४५- क्या अल्लाह और साई एक हैं ?फिर अल्लाह मालिक हमेसा क्यों कहा करते थे ? क्यों साई ने कहा की अल्लाह ही सबको फल देने वाला है ?

प्रश्न ४६– जब मार्केट में साई नहीं आया था तो तुम पहले लोगों को उपवास करने को कहते थे अब तुम्हारे विचार उसके विपरीत कैसे हो गये ? क्यों पैसो केलिए खुद को बेच रहे हो ?

साई ने उपवास करने को मना किया और पौराणिक शास्त्रों में उपवास करने का विधान है । अब बताईये की साई सही है या पुराण ?

प्रश्न ४७– जब साई बाल ब्रह्मचारी थे तो परस्त्रीयों से तेल मालिस क्यों करवाते थे ,क्यों नर्तकियों की नाच देखते थे ? जबकि ब्रह्मचारीयो केलीये स्त्रीयों से दूर रहने का विधान है

प्रश्न ४८– अगर साई बाबा योगी थे तो अपने इन्द्रियों पर क्यों नियंत्रण नहीं था ?क्यों लोगों को गन्दी गन्दी गालिया देते थे (अध्याय १) ,क्यों लोगों को पत्थर मारते थे ?

प्रश्न ४९– अध्याय २० में लिखा है "अपने पास जो कुछ है उसी में संतुष्ट रहना क्यों की यही ईश्वर की इच्छा है" तो फिर साई गुरुवार ब्रत कर उससे ज्यादा पाने की इच्छा रख के क्यों बाबा के इच्छा विरुद्ध कार्य कर रहे हो ?

प्रश्न ५०– अध्याय १८–१९ में साई बाबा ने कहा है "इस मस्जिद में बैठकर में सत्य ही बोलूँगा कि किन्ही साधनाओ या शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं है" लेकिन फिर अध्याय २० में लिखा है की वो किसीको मच्छिन्द्रगढ़ किसीको कोल्हापुर या सोलापुर साधनाओं केलिए भेजा । जब साधनाओ की जरुरत नहीं तो साधना करने केलिए भेजते क्यों थे ?तो क्या साई बाबा झूठ कहा ?

प्रश्न ५१– ईश्वर खुद सृष्टिकर्ता है उससे बड़ा और कोई नहीं । साई बाबा ईश्वर थे तो अल्लाह मालिक क्यों कहते थे ?

प्रश्न ५२– जब साई बाबा खुद चिलम पीते थे आप उन्हें अपना आदर्श मानते हो उन्हें चिलम कलिए गंजा प्रसाद चढाते हो । तो अपने बच्चों को नसा करने से क्यों रोकते हो ? बाबा के प्रिय प्रसाद उन्हें क्यों नही देते ?

प्रश्न ५३– दोनों साई में से असली कौन है दो दो दोनों के नाम पर अलग अलग मन्दिर ट्रस्ट बना कर लोगों को भ्रमित क्यों करते हो ?

प्रश्न ५४– मूर्ति पूजा का जब वेदों में विधान ही नहीं है तो तुम साई के मूर्ति पूज कर वेद विरुद्ध कार्य क्यों कर रहे हो ?

प्रश्न ५५– जब राम और रहीम एक नहीं है तो साई बाबा ने दोनों को एक बता के झूठ क्यों बोला ?

प्रश्न ५६– साई बाबा शिरडी के एक पहलबान मोहिद्दीन तम्बोली से हार गये , एक साधारण मानव से कुश्ती में हार गया वो सर्वशाक्तिम्मान कैसे हो सकता है ?

प्रश्न ५७– साई बाबा ने चंदे के पैसो से धर्म कार्यो में खर्च करने के बजाय नसा मादक द्रव्य खरीदने में खर्च करते थे,दान में मिले धन का दुरपयोग करना क्या सही है ?

प्रश्न ५८–श्री कृष्णा ने गीता में क्रोध को पाप कर्म बताया है, और साई बाबा तो अकारण ही क्रोधित होते थे तो क्या साई बाबा पापी थे ??

प्रश्न ५९– साई बाबा अगर कृष्णा के अवतार के उनके चरित्र गीता के विरुद्ध क्यों है ?

प्रश्न ६०– सबकुछ साई करवा रहा है तो बताये जितने गलत काम हो रहे है उन सबके लिए साई जिम्मेदार क्यों नहीं ? अगर वही सब कुछ करवा रहा है और और उसके मर्जी से हो रहा है तो गलत कामों के कारण इसपर या इनके प्रचारकों पर केस चलाना चाहिए इनको जेल में डालना चाहिए । इनके ट्रस्ट पर मंदिरों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए । इसी में ही देश व जनता की भलाई है ।

आपसे अनुरोध है धर्म रक्षा हेतू ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचायें ।